साकेत धाम
कविता कोश
• अध्यात्म • हास्य व्यंग • विसंगतियां
सुरेश (809 789 3453)
Skgakoli@gmail.com

साकेत धाम

काव्य

अध्यात्म, इतिहास, पुरातन कथा,

उद्गार, विसंगतियों या हास्य व्यंग्य

****

सुरेश कुमार गुप्ता

362, डीएसआर सनराइज टावर्स,

चन्नासंद्रा मेन रोड, ए के गोपालन कॉलोनी,

व्हाइटफ़ील्ड, बेंगलुरु, कर्नाटक 560066

मोबाइल नंबर : 8097893453

ईमेल : skgakoli@gmail.com

भूमिका

प्रस्तुत संकलन काव्य रूप में
अध्यात्म, इतिहास, पुरातन कथा,
उद्गार, विसंगतियों या हास्य व्यंग्य
की प्रस्तुति है।

मन भटकता है ।
मन विषाद ग्रस्त हो जाता है,
जब जब मन समाज की
विसंगतियों से दो चार होता है।

जरूरी तो नही कोई क्या नाम दे
इस तुक बंदी को,
भावनाओ में वर्षो का सार
संकलित होता है।

मन कभी आध्यात्म में झुके
कभी इतिहास में झांक आये।
दूर दूर विसंगतियों में जाए।
व्यंग्य उजागर कर जाए।

कभी मन हास्य से खिलखिलाए।
बेबस है इंसान कुछ कर तो न पाए,
पर बोलने से मगर
कहां चुप रह पाए।

अनुक्रमणिका

1. साकेत धाम

महाप्रयाण कथा है यह जगत अधिपति श्री राम की।
नतो अहम नतो अहम, कथा है श्रीसाकेत धाम की।
नमो नमो इष्टदेव गुरुदेव,नतो अहम विद्या वरदायनी।
आशीष मिले हर शुभ कार्य मे, जगत्पति श्रीराम की।

हिन्दू धर्म के आधार स्तंभों में एक हुए प्रभु श्रीराम।
मर्यादा पुरुषोतम केवल वे कहलाये सर्व गुणनिधान।
मनुपुत्र इक्ष्वाकु के रघुकुल में अवतरित हुए श्री राम।
आदर्श चरित्र प्रस्तुत कर एक सूत्र में बांधा समाज।

भारत की कण कण में बसे, आत्मा है प्रभु श्रीराम ।
राम नाम अति सुंदर है, इसकी महिमा है अपरंपार।
रामकीर्ति गायी वाल्मीकि ने रचा महाग्रंथ रामायण।
गोस्वामीजी ने रामचरितमानस रचा बसे अवधधाम।

चौदह वर्ष का वनवास गुजारा सन्यास जीवन जीया।
अंतिम दो वर्ष सीता माता की खोज में भ्रमण किया।
श्रीराम की सेना सजा रामेश्वरम की ओर कूच किया।
लंका चढ़ाई के पहले शिवलिंग बना शिवपूजन किया।

विजय पा रावण पर, उसके अभिमान का नाश किया।
फहरा विजय पताका,अधर्म हरा धर्म का काज किया।
अयोध्या के राजपाट में रामराज्य का ध्वज फहराया।
प्राकट्य हुआ स्वर्ग का, छा गयी सम्पन्नता धरती पर।

रामराज में नैतिकता का राज सभ्य जन मानस यहां।
मर्यादा में रहकर करते थे, संपन्न जीवन यापन यहां।
जब श्री राम के लीला का समापन का समय आया।
गुरु वशिष्ठ, ब्रह्माजी से संसारमुक्ति का आदेश पाया।

मर्यादा पुरुषोत्तम ने तब जल समाधि का मन बनाया।
एकमात्र धरती पर था जो साकेत धाम का है श्री द्वार।
अश्विन पूर्णिमा को सरयूनदी की ओर प्रयाण किया।
सपरिवार ब्रह्म मुहूर्त में ॐॐ कर आगे बढ़ते गए ।

जल हृदय और अधरों को छूता सिर ऊपर चढ़ गया।
और श्री राम परिवार साकेत धाम में प्रवेश कर गया।
महाप्रयाण कथा है यह जगत अधिपति श्री राम की।
नतो अहम नतो अहम, कथा है श्रीसाकेत धाम की।

नारायण के वैकुंठ को साकेत धाम भी कहा जाता है।
हरभक्त सपना देखे एक बार मिले उसे साकेत धाम।
ज्ञान,वाणी,इंद्रियों से परे साकेत की महिमा अपरंपार।
माया,मन, गुणों के परे जहां बसते परमधाम श्री राम।

हनुमान् सुंदर बुद्धि से उनके गुणों में गोता लगाते है।
श्री राम के निर्मल गुणों को सुन अत्यंत सुख पाते है।
यहाँ घर-घर में पुराणों रामचरित्रों की कथा होती है।
साकेत में राम रूप मातासीता के संग पूजे जाते है।

पुरुष स्त्री सभी श्री रामचंद्रजी का गुणगान करते हैं।
आनंद में दिन-रात का बीतना भी नहीं जान पाते है।
जहाँ भगवान् श्री राम स्वयं राजा हो विराजमान हैं।
और उस दिव्य नगर को देखकर वैराग्य भुला देते हैं।

हर जगह राम नाम की महिमा का गुणगान होता है।
राम नाम महामन्त्र हर प्रहर सब ओर जाप होता है।
सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, वायु सभी में इसकी शक्ति है।
संसार चले रामनाम से, इसकी महिमा अपरम्पार है।

महाप्रयाण कथा है यह जगत अधिपति श्री राम की।
नतो अहम नतो अहम, कथा है श्रीसाकेत धाम की।
अवधपुरी के निवासियों के सुख-संपत्ति का वैभव।
संपदा का वर्णन हजारों शेषजी भी नहीं कर पाते है।

नारद सनक आदि मुनीश्वर और सभी संत योगी यति।
कोसलराज के दर्शन करने प्रतिदिन साकेत आते हैं।
दिव्य स्वर्ण और रत्नों से बनी हुई यहां अटारियाँ हैं।
मणि-रत्नों की अनेक रंगों की सुंदर ढली हुई फर्शें हैं।

नगर के चारों ओर अत्यंत सुंदर परकोटा बने हुए है।
जिस पर चारों ओर सुंदर रंग-बिरंगे कँगूरे बने हुए है।
उज्ज्वल महल ऊपर से आकाश को चूम रहे हैं।
महलों के कलश दिव्य प्रकाश से जगमग हो रहे है।

महलों में मणियों से रचे हुए झरोखे सुशोभित हैं।

और घर-घर में मणियों के दीपक शोभा पा रहे है।
घरों में मणियों के दीपक चंहुओर शोभा दे रहे हैं।
मूँगों की बनी हुई देहलियाँ दूर से ही चमक रही हैं।

मणियों के खम्भे पन्नों जड़ी हुई सोने की दीवारें।
ऐसी सुंदर हैं मानो ब्रह्मा ने खास तौर से बनाई है।
महल मनोहर विशाल सुंदर स्फटिक के आँगन हैं।
प्रत्येक द्वार पर हीरों से जड़े हुए सोने के किंवाड़ हैं।

श्री रामजी के चरित्र कहती घर-घर चित्रशालाएँ हैं।
जिन्हें मुनि देखते हैं, तो उनके भी चित्त चुरा लेते हैं।
सरयूजी के किनारे-किनारे देवताओं के मंदिर हैं।
नदी किनारे विरक्त ज्ञानी संन्यासी निवास करते हैं।

नगर की शोभा तो क्या नगर के बाहर परम सुंदर है।
श्री साकेत धाम दर्शन से संपूर्ण पाप भाग जाते हैं।
मनोहर घाट बँधे हुए चारों ओर सुंदर उपवन है।
वन, उपवन, बावलिया और तालाब सुशोभित है।

अनुपम बावलियाँ तालाब और कुएँ शोभा देते हैं।
सुंदर सीढ़ियाँ निर्मल जल देव मुनि मोहित होते हैं।
राजद्वार सुंदर है गलियाँ, चौराहे,बाजार सभी सुंदर है।
वर्णन करते नहीं बनता, वस्तुएँ बिना मूल्य मिलती हैं।

बजाज, सराफ आदि वणिक् कुबेर ऐसे जान पड़ते हैं
संपत्ति वर्णन क्या जहाँ स्वयं लक्ष्मीपति राम रहते है

महाप्रयाण कथा है यह जगत अधिपति श्री राम की।
नतो अहम नतो अहम, कथा है श्रीसाकेत धाम की।

साकेतधाम एक दिव्यलोक है एक दिव्य आलोक है।
जिसे मोक्ष मिलता है वह साकेतधाम पा जाता है।
अज्ञान के कारण बार बार जन्म लेता और मरता है।
जन्ममरण के बंधन से छूटना साकेत कहा जाता है।

मोक्ष परम अभीष्ट या परम पुरूषार्थ कहा जाता है।
आत्मतत्व का साक्षात ही साकेतधाम कहा जाता है।
न्यायदर्शन में दुःख का आत्यंतिक नाश ही मोक्ष है।
सांख्यमत से तीनों तापों का समूल नाश मोक्ष है।

उपनिषदों में आनन्द की स्थिति ही मोक्ष होता है।
द्वंद्वों के विलय का आनंद ही साकेत कहा जाता है।
वेदांत में मुमुक्षु को श्रवण,मनन, निधिध्यासन कर
आत्मा,जो ब्रह्मस्वरूप है, का साक्षात्कार होता है।

अद्वैत की अनुभूति का जीवन में अनुभव होता है।
जीवनमुक्ति की स्थिति को साकेत कहा जाता है।
भारतीय दर्शन में नश्वरता दुःख का कारण है।
संसार आवागमन,जन्म-मरण नश्वरता का केंद्र हैं।

इस अविद्याकृत प्रपंच से मुक्ति पाना ही मोक्ष है।
सब सुख दुःख,मोह छूटना साकेत कहा जाता है।
संसार के दुःखमय स्वभाव को स्वीकार किया है ।

मुक्त होने को कर्ममार्ग या ज्ञानमार्ग का रास्ता है।

अन्ततोगत्वा वैयक्तिक अनुभूति ही सिद्ध होता है।
जीवन की अंतिम परिणति साकेत कहा जाता है।

2. शबरी की भक्ति

अनन्य उपासक शबरी के राम ही इष्ट थे।
जिसने आराध्य को जूठे बेर खिलाए थे।
सालो रास्ता निहारा उसने इंतजार किया।
इष्टदर्शन की आशा को दिल मे पुष्ट किया।

महापुरुष तो जमाने मे अवतरित होते है।
भील जाति की बालिका ऐसी भक्त हुई।
जयंती फाल्गुन कृष्ण सप्तमी को आती।
सुबह-शाम पूजा-पाठ और व्रत रत रहती।

उसके विवाह में पशुबलि का चलन था।
पशुवध जान उसका मन विचलित हुआ।
पशु बचाने विवाह नही कर घर छोड़ आई।
ऋषि आश्रम रहने की अनुमति मिल गयी।

भक्ति व्यवहार से सबका मन मोह लेती।
मतंग ऋषि की पितृवत सदा सेवा करती।
ऋषि मतंग ने एक दिन शरीर छोड़ दिया।
शबरी को रामदर्शन का आशीर्वाद दिया।

जब भगवान राम दर्शन की लालसा बढ़ी।
एक दिन मतंग ऋषि के आश्रम पहुंचे हरि।
कंद-मूल फल ईष्ट चरणों मे अर्पित किया।
राम को सामने देख वो उन्हें निहारती रहीं।

शबरी तृप्ति नही हो रही इष्ट की सेवा में।
चखकर मीठे बेर वो भगवान को देती रही।
शबरी की भक्ति में मोहित श्री राम हो गए।
भक्ति की पराकाष्ठा, प्रभु जूठे बेर खा रहे।

धर्म भक्ति में न किसी का अधिकार हुआ।
स्त्री पतित होकर भक्ति की सिरमौर हुई।
पम्पा सरोवर का जल वर्षों से अपवित्र था।
उसके चरणोंदक से श्रीराम ने पावन किया।

3. रामायण कथा रहस्य

रामायण कथा प्रभु श्री सियाराम की।
कथा रहस्य है महाग्रंथ महापुराण की।
आत्मा भी है राम, परमात्मा राम की।
कथा यह जगत्पति श्री सीता राम की।

कथा है साकार रूप श्री भगवान की।
कथा आत्मा परमात्मा के पहचान की।
आत्मा इस जगत में विचरण करती है।
विशुद्ध रूप परमात्मा से मिलन करती है।

सत्व रजस तमस मातृरूप सृष्टि रचते है।
तीनो का परिमाण जबतक एक होता है।
वह सृष्टि का उदभव प्रलयकाल होता है।
मात्रा का अंतर संसार की रचना करता है।

श्रीराम जगत में साकार रूप में आते है।
मन को हनुमानजी के रूप धर आते है।
मन का जब दास रूप में रहना होता है ।
तब मन जीवन मे आत्मकल्याण करता है।

बल ही छोटा भाई लक्मन बनकर आता है।
जब हावी न हो बल कल्याण ही करता है।
भक्ति रूप धरकर भरत कथा में आता है।
निष्काम कर्म हो तब भक्ति त्याग रहता है।

बुद्धि ही सीता का रूप बनाकर आती है।
जीवन के हर निर्णय में साथ निभाती है।
जीवन मे जब अहंकार हावी हो जाता है।
बुद्धि का साथ छूट उसका हरण होता है।

आत्मा का जीवन शांत और श्रेष्ठ होता है।
जब तक अहंकार प्रवेश नही कर जाता है।
अहंकार रूप रावण जब जीवन मे आता है।
बुद्धि रूपी सीता का हरण करता जाता है।

अहंकार को मार बुद्धि को जो लौटाता है।
परम कल्याणी भक्ति वह जीवन मे पाता है।
पर क्या भक्ति से जीवन सफल हो पाता है।
परमलक्ष्य तो परमात्मा को पाना होता है।

तब बुद्धि रूपी सीता का वनवास होता है।
मोक्ष साधन में कर्म बुद्धि का त्याग होता है।
बुद्धि छोडकर परमात्मा से मिलन होता है।
ये जीवन का परम साधन मोक्ष ही होता है।

4. मुण्डकोपनिषद

शौनक सद्गृहस्थ महर्षि अंगिरस से पूछा।
वह कौन, जिसे जानकर सब जाना जाता।
‘परा-अपरा’ विद्या से ही सब जाना जाता।
अपरा अध्यात्मिक, परा यौगिक साधना।

अपरा यह संसार है जहां कर्म नदी प्रवाह।
अपरा का अंत जहां, परा का विषय मोक्ष है।
ब्रह्म प्राणियों में अन्तरात्मा रूप में रहता।
तप ज्ञान-युक्त चराचर सृष्टि को रचता है।

प्राणरूप परमात्मा को जो जान जाता है।
मोहबन्धन तोड़ परमात्मा से मिल जाता है।
अक्षरब्रह्म ने जगत, इच्छा से उत्पन्न किया।
नाना योनियां बनाई, कर्म निर्धारित किये।

अन्न बनाया,अन्न से प्राण, प्राण से मन बने।
मन से परब्रह्म जानने की जिज्ञासा पैदा की।
अग्नि से निकल चिनगारी उसमें लीन होती हैं।
ब्रह्म से अनेक भाव प्रकट, उसीमें लीन होते हैं।

संसार परमपुरुष में स्थित,अक्षरब्रह्म व्याप्त है।
सत्य,अमृततुल्य,परमानन्द जीवन का लक्ष्य है।
वह प्रकाशमान,अमूर्त ब्रह्म सर्वत्र विद्यमान है।
अजन्मा,प्राणरहित,मनरहित एवं उज्ज्वल है।

ब्रह्म से प्राण, मन एव इन्द्रियां उत्पन्न होती हैं।
जल,वायु,अग्नि,आकाश,पृथिवी पैदा होती है।
अग्नि ब्रह्म का मस्तक, सूर्यचन्द्र उसके नेत्र हैं।
दिशांए ही वेद-वाणियां है, पृथ्वी जिसके पैर हैं।

वायु उसके प्राण, सम्पूर्ण विश्व उसका हृदय है।
हृदय-रूपी गुफ़ा में स्थित यह दिव्य प्रकाश है।
ब्रह्म परमाणु और सूक्ष्मतम जीव से भी सूक्ष्म है।
समस्त लोक-लोकान्तर इसमें निवास करते हैं।

जीवन आधार,अखिल ब्रह्माण्ड में सर्वत्र एक है।
वाणी का सार ये, मानसिक साधना का लक्ष्य है।
जीवात्मा तीर, प्रणव धनुष और ब्रह्म जो लक्ष्य है।
एकाग्रता से संधान कर ब्रह्म का लक्ष्य बेधता है।

चेतन रूप अमृत सागर,आनन्द की हिलोरे है।
अमृतसिन्धु में गोता लगा साधक अमर होता है।
वृक्ष शरीर है,आत्मा परमात्मा निवास करते हैं।
जीव परमात्मा सख्यभाव से दो पक्षी रहते है।

एक कर्म फल चखता और दूसरा उसे देखता है।
एक दृष्टा दूसरा मोहवश इन्द्रिय भोग करता है।
सत्य की जीत होती,सत्य देवयान मार्ग पूर्ण है।
इससे ही कामना रहित ऋषि परमपद पाते हैं।

जहां सत्य भण्डाररूप परमात्मा का निवास है।

ब्रह्म अत्यन्त महान, दिव्य अनुभूतियों वाला है।
ब्रह्म कहीं दूर नहीं,हमारे हृदय में विराजमान है।
निष्काम,सतत साधना,मन,आत्मा से मिलता है।

निर्मल अन्त:करण वाला आत्मज्ञानी पाता है।
जिस लोक रूप को चाहता,उसी में समाता है।
ब्रह्मज्ञान इच्छा वाले इन्द्रिय नियन्त्रण करता है।
इन्द्रियनिग्रह बाद चलायमान मन वश करता है।

तभी उसको आत्मा का साक्षात्कार होता है।
आत्मज्ञान से साधक ब्रह्मज्ञान पथ में बढ़ता है।
आत्मज्ञानी निर्मल ज्योतिर्मय ब्रह्म जानता है।
उसमें सम्पूर्ण विश्व समाहित नज़र आता है।

निष्काम भाव से साधना वाले विवेकी पुरुष
इस नश्वर शरीर के बन्धन से मुक्त हो जाते हैं।
प्रवचन बुद्धि लौकिक ज्ञान से नही जाना जाता।
आत्मज्ञान साधक की पात्रता से प्रकट होता है।

कामनारहित,सहजअन्त:करण परमात्मा पाते हैं।
सर्वत्र सर्वरूप परमेश्वर में समाहित हो जाते हैं।
नदी नामरूप त्यागकर समुद्र में विलीन होती हैं।
ज्ञानी पुरुष विमुक्त हो परमात्मा में लीन होते हैं।

उसे जानने वाला स्वयं ही ब्रह्म-रूप हो जाता है।
लौकिक-अलौकिक ग्रन्थि से मुक्त अमरत्व पाता है।

5. जीवन के अंतरंग पलों में

जीवन के अंतरंग पलों में झांके अतीत की गहराई में।
आदिम युग का मानव जो न फरेब जानता न लालच।
अस्तित्व बनाने को पेट की भूख एकमात्र कारण था।
कारण वो कार्य भी, इंसान भोक्ता और भोग्य हुआ।

आवश्यकता हमेशा पर आविष्कार की जननी रही।
असभ्य मानव की जरूरत भूख सुरक्षा की ओर बढ़ी।
परिवार जुड़ते गए, और समाज का प्रादुर्भाव हुआ।
संगठन में शक्ति को ढूंढा और कस्बे शहर होते गए।

सुरक्षा हिंसक पशु पीछे छोड़ बीमारी की ओर बढी।
आत्मनिर्भरता से आगे सहयोग का सूत्रपात हुआ।
जरूरत का विश्लेषण हुआ आकांक्षाए अधूरी रही।
पेट भरा सुरक्षा मिली, मनोरंजन की जरूरत बढ़ी।

सुख खोजा दुख आया,खेल नियति का मुश्किल था।
दुख सर्वकालिक रहा, बाहरी सुख अल्पकालीन रहा।
धर्म मे समाज कानून गुंथे गए,सुख अबभी नदारद रहा।
सुख खोजने जंगल का रुखकर जिसने ढूंढा पा लिया।

वक्त था जागने जगाने का, अवतरित वेद दृष्टा हुए।
समाज में सीख के रास्ते बनाए एवं धर्म इज़ाद हुए।
कहाँ बसा सुख रिश्ते समाज में, सुविधा के साज में।
झांका अंतरंग मन में, सुख छिपा मन की आवाज़ में।

6. मन का भार

पहाड़ी संकरा रास्ता, गठरी को भारी बना रहा
मन भारी भारी सा था, पैरों का भार बढ़ा रहा।
हांफता सन्यासी विचारों के सैलाब में बह रहा
मन दूर निकल आशंकाओ से भरता जा रहा।

पास ही अल्हड़ कन्या गाती गुनगुनाती जा रही
भाई को उठाये गोद में भार का अहसास न था
इसे देखकर सन्यासी का कोतुहल जाग गया
स्वाभाविक प्रश्न था समाधान उसने पूछ लिया

बेटी कैसे मुस्करा लेती इतना वजन उठाये हुए।
चौंककर बोली कहाँ वजन,यह तो भाई है मेरा।
सारे विचारों को छोड ये मन तिरोहित हो गया।
भार गठरी में नही था, वजन मन में था हो रहा।

खुश था रेखा बना,न छोटा लंबा साधारण सा।
करीब लंबी रेखा बना, इसको छोटी कर गया।
ना दोष ना गुनाह चोर इस मन में छिपा हुआ।
छोटेपन का एहसास हुआ दुखी मन कर गया।

भूखे को थाली देख सुख का आभास हो रहा
पेट भर खा लिया तो बचा खाना दुख दे रहा
मीठा मिलना भी सुख का एहसास देता है।
एक सीमा के बाद वह दुख में बदल देता है।

समझ जाए मानव सुख कुछ पाने में नही
वह मन की गहराई में ही पनपता जाता है
जो अहसास कर ले इस सुख के झरने का
उसका दुख सदा ही तिरोहित हो जाता है।

मन सापेक्षित हो सुख दुख में टहलता रहता
एक पल सुख देता, उसी पल दुख ले आता।
मन अगर भारी हो रास्ता लंबा हो जाता है।
बेमन से करे तो हर काम भारी हो जाता है।

7. ओम जय जगदीश हरे

ओम जय जगदीश हरे, ईशप्रशंसा करते जाए
क्या आत्म प्रशंसा से प्रभु प्रसन्न होने पाए
मूरख खल कामी बने,समर्पण बयान कर रहे
सुख सम्मति मांगते,वहां याचक बनकर खड़े

अभिमान तिरोहित हो ऐसा आत्मदान करे
आरती भय से नहीं पैदा हो, प्रेम प्रवाहित करे
शब्दो मे उलझने से बचे शून्य का संगीत रचे
स्तुति याचक बनकर नही, कृतज्ञता से करे

सरल सहज बनते जाये, स्व मन का दान करे
आरती में सहज प्रेम और करुणा की गंगा बहे
विषय विकार मिटे कुमति विसर्जित हो जाये
करुणा हस्त बढ़ते जाए शरणागत होते जाये

श्रद्धा भक्ति संत सेवा का भाव बढाते जाए
शरण गहु,आस करु छोड़ समर्पित हो जाये
क्रिया नही चेतना है, करे नही बस हो जाए
प्रेम प्रवाह बहे ऐसा, बूंद से सागर हो जाए

अंतरयामी परमब्रह्म जो है उससे क्या छिपाए
करुणा सागर, पालनकर्ता से कृपा मिल जाए
जो अगोचर सबके प्राणपति,वे गोचर हो जाये
उस परमात्मा से आत्मा का मिलन हो जाये।

8. सूफी संत तबरेज़ रूमी की शिक्षाए

प्रशंसको शिष्यो का हजूम होकर भी
खालीपन का एहसास नही मिट पाया
रूमी को लगा जीवन में कुछ कमी है
भीतर ईश्वर जानने की जो ललक है

जहां चाह होती राह निकल आती है
रूमी के जीवन मे सूफी संत आया
घटना ने उसका जीवन बदल दिया
संत शम्स का उसे कायल कर दिया

शम्स ने सहज पूछा क्या पढ़ रहे हो
उत्तर था ये आपकी समझ से परे है
अचानक देखा किताबे जलने लगी
शम्स बोला ये तेरी समझ के परे है

घटना का असर कुछ इस तरह हुआ
रास्ता शिक्षा से आध्यात्म होता गया
दरवेश शम्स जबसे जीवन में आए
शिक्षक तबरेज़ रूमी संत बना गए

रूमी ने किताबों का साथ छोड़ दिया
गलियों में नाचते घूमते सहज गाने लगे
शम्स से जीवन रहस्य प्रेम जो समझा
अभिव्यक्त करने में जीवन लगा दिया

आप समुद्र में बूंद नही,बूंद में सागर हैं
मौन ईश्वर की भाषा शुद्ध आंख से देखो
हर इंसान विशेष काम के लिए बना है
वो करने की इच्छा हर दिल में डाली है

शब्द नहीं, शब्द केवल बहाना होते हैं.
आंतरिक भाव दुसरे की ओर लाता है
शब्दों को ऊंचा उठायें,आवाज नहीं
फूल वर्षा से बढ़ते,गड़गड़ाहट से नहीं
चालाक था दुनिया बदलना चाहता था
आज बुद्धिमान हो खुद को बदलता हूँ
शोक मत करो.आप जो कुछ खोते
वो वापस दुसरे रूप में मिल जाता है

जिसे आप ढूंढते वो आपको ढूंढ रही
प्रेमी मिलते नहीं एक दुसरे में रहते हैं

9. आम्रपाली -नगरवधु का इतिहास

पाली ग्रन्थ सौंदर्य बखानते,जो उसका दुर्भाग्य बना।
नियति का खेल ऐसा, लावारिश का इतिहास बना।
लिच्छवी गणराज्य वैशाली, आम्रवृक्ष के नीचे मिली।
नाम आम्रपाली, गणराज्य व्यवस्था की शिकार हुई।

राजा व्यापारी सब चाहते, जिससे नगर अशांत हुआ।
लोकतंत्र में एकता शांति के नाम नगरवधू बनाई गई।
गणराज्य के नाम कोठा मिला,जीवन मे अंधेरा हुआ।
जनपथकल्याणी उपाधि, महल मिला, प्रतिष्ठा हुई।

बौद्धकालीन राजनृतकी को देख हर कोई मुग्ध होता।
मगध राजा बिंबिसार भी मिलने भेष बदलकर आता।
भिक्षा मांगते शिष्य को देख, आमृपाली प्रेम में पड़ी।
महल से आमंत्रण पा,बुद्धआज्ञा से भिक्षुक वहां रहा।

मोहपाश में न बांध सकी, बुद्ध शरण में पहुंच गई।
धम्म के आगे नतमस्तक, संघ की उपासिका हुई।
तथागत का आतिथ्य कर, दान दे वह उपकृत हुई।
पाप के जीवन से मुख मोड़, वह संघ में प्रविष्ठ हुई।

10. तुगलकी फरमान

ऐसा सुल्तान दिल्ली में तख्त नशीं हुआ।
जो सख्त अजीब फैसलों से जाना गया।
तुगलकी फरमान मुहावरा मशहूर हुआ।
इतिहास में उसे पागल से नवाजा गया।

उसके तथाकथित सुधारवादी कामो ने
आम जनता का जीना दुश्वार ही किया।
सुधारवादी कदम सही साबित करने वो
तमाम हथकंडे और दावे फरमाता रहा।

जनता त्रस्त थी उसके कामो से और वो
नाखुश रहा सदा नकारात्मक माहौल से।
उसे दक्षिण का माहौल आकर्षक लगा।
तत्काल प्रजा सहित देवगिरी कूच किया।

जब राजधानी देवगिरी का फरमान किया।
अत्याचार की पराकाष्ठा जो न चल पाया।
असमर्थ को हाथी पूंछ से बांध दिया गया।
किसीका हाथ किसी का पांव बच पाया।

पहुंचते पहुंचते कितनों का इंतक़ाल हुआ।
जुनुन की पराकाष्ठा में बढे मंजिल की ओर।
नही समझ पा रहा कोई नही बोल,कह रहा।
न खबर न परवाह,कौन फंसा कौन मर रहा।

जिसने बोलने की हिम्मत की उसे मरना पड़ा।

किले में पानी का अभाव जल्द समझ आया।
दिल्ली ठीक लग रही फिर दिल्ली कुच किया।
फैसले पर हँसे या रो पड़े,प्रजा समझ नही रही।
मरा सुलतान तो प्रजा को छुटकारा मिल गया।

11. विराटनगर की सड़कों पर

मंद मंद मुस्कान सहेजे कारे कजरारे नयनो से
काले घुंघराले केश बिखेरे और मलिन वस्त्रों में
विराटनगर की सड़कों पर वो आवाज़ लगा रही
जरूरत जिसे सैरन्ध्री की, तत्पर हो सेवा करेगी

रानी सा रूप मधुरवाणी कैसे सहज विश्वास करे
सैरन्ध्री का वेश बनाये, अन्न जल के लिए भटके
झांक कर झरोखों से नगर की शोभा निहार रही
विराट महारानी सुदेष्णा विश्वास नही कर पा रही

तत्क्षण सेवक बुला लाये। रानी ने संवाद किया
कौन हो भामिनि तुम किस आस में भटक रही
बोल रही सैरंध्री काम की तलाश में भटक रही
केश विन्यास का काम अन्न-वस्त्र मिल जाये।

सुदेष्णा बोली जो कहती विश्वास नहीं हो रहा
दिव्य रूप तरुणा तुम,अब अनाथ सी लग रही
कहाँ ऐसी रूपवती स्त्रियाँ दासी हुआ करती है
तु दासियां रखनेवाली रानी सी जान पड़ती है

अंग स्वाभाविक लालिमा केश काले चिकने हैं।
पलकें काली तिरछी,ओष्ठ पके बिम्ब से लाल हैं।
कमर पतली गर्दन शंख की शोभा छीन लेती है।
नसें मांस ढंकी मुख चन्द्र को लज्जित करता है।

दासी तो तुम किसी प्रकार भी नहीं हो सकतीं।
तुम यक्षी देवी गन्धर्वकन्या,अप्सरा, देवकन्या हो
द्रौपदी बोली मैं न देवी,न गन्धर्वी असुर पत्नी हूँ,
मैं सेवा करने वाली सैरन्ध्री हूँ, सच कह रही हूँ।

केश श्रृंगार जानती,उबटन अंगराग कर लेती हूँ।
शुभे! फूलों के सुन्दर विचित्र हार गूँथ लेती हूँ।
सत्यभामा कुरुकुल वधु द्रौपदी की सेवा में रही हूँ।
भिन्न स्थानों में सेवा से भोजन पाकर विचरती हूँ।

मुझे जितने वस्त्र मिलते, उतने में प्रसन्न रहती हूँ।
देवि!वही सैरन्ध्री आज आपके महल में आयी हूँ।

12. आइंस्टीन की त्रासदी

आइंस्टीन एक बार प्रिंसटन से एक ट्रेन में यात्रा कर रहे थे
जब कंडक्टर गलियारे से नीचे आया, हर यात्री के टिकट चेक कर रहा था। जब वह आइंस्टीन के पास आया। वह अपना टिकट नहीं ढूंढ सका।
कंडक्टर ने कहा, "डॉ। आइंस्टीन, मुझे पता है कि तुम कौन हो। हम सब जानते हैं कि तुम कौन हो। मुझे यकीन है कि एक टिकट खरीदा है। इसके बारे में चिंता मत करो।"
जैसे ही वह अगली कार के लिए जाने के लिए तैयार हुआ, उसने मुड़कर देखा और महान भौतिक विज्ञानी को अपने हाथों और घुटनों पर अपने टिकट के लिए सीट के नीचे देखा।
कंडक्टर ने वापस दौड़कर कहा, "डॉ। आइंस्टीन, डॉ। आइंस्टीन चिंता मत करो, मुझे पता है कि तुम कौन हो।
कोई बात नहीं। तुम्हें टिकट की जरूरत नहीं है। मुझे यकीन है कि तुमने एक खरीदा है।"
आइंस्टीन ने उसे देखा और कहा, "युवा पुरुष, मैं भी जानता हूं कि मैं कौन हूं।
बस मुझे नहीं पता कि मैं कहां जा रहा हूं।"

13. बाड़ेबंदी के खेल में

अजीब हुआ खेल शुरू यह आपाधापी का।
समझ नही पड़ती कौन किसका सगा यहां।
कहाँ कहाँ कब कब बाडे में सेंध हो जाएगी।
देखो बकरे की मां कब तक खेर मनाएगी।

घूमते रिसोर्ट होटलों में बचाते सेंधमारी से।
सुबह शाम गिनती कर कहते सब ठीक है।
आपस में इल्ज़ाम लगाते कौन भरमा रहा।
डर फैला ऐसा दोस्त दुश्मन नजर आ रहा।

समय आ गया बैंको में लॉकर बनाये जाये।
जहां विद्यायको को नेता जमा करवा पाए।
जैलो में प्रकोष्ठ बने विधायक रखवा आए।
सुरक्षा की मिले गारंटी, सेंध ना मार पाये।

तोड़ सुरक्षा कवच कोई बाड़े में घुस जाता।
कोई बाड़े से बच कर बाहर निकल आता।
कोई रुपये से की मंत्री पद से ललचा जाए।
कोई आकर तरह तरह से लालच दे जाए।

आपस मे एक दूसरे पर ये इल्ज़ाम लगाते।
सब लोकतंत्र की हत्या का प्रयास बताते।
कौन है सूत्रधार बाड़ेबंदी के इस खेल का।
कहाँ ये खेल अब लोकतंत्र को पहुंचाएगा।

आपका वोट एक उम्मीदवार को जाएगा।
दूसरा उसी से मिलकर सरकार बनाएगा।
सत्ता के खेल में मिलजुल बांटेगे खायेंगे।
आप सदा रोटी को तरसते नज़र आएंगे।

नोटेबन्दी तालाबंदी बाड़ेबंदी के खेल में।
बिल्लियां बन बन्दर से रोटी बाँटवाएँगे।
भाग्यविधाता वे लिखे किस्मतआपकी।
आप तो बस उनका ही भाग्य बनाएंगे।

14. आत्मनिर्भर कौन

देश मे तीन प्रतिशत लोगो को रोजगार है।
बाकी सब जनता तो आत्मनिर्भर ही है।
नही ये अमेरिका जहाँ हर एक कमाता है।
माता पिता को वृद्धाश्रम में छोड़ आता है।

सुबह सवेरे पहुंच जाते है लोग खेतो में।
गांव नुक्कड़ चौराहे दिहाड़ीवाले मंडी में।
खोल दुकान छोटी लगते रोटी कमाने में।
आत्मनिर्भर होते परिवार का पैट भरने में।

यहां तो ऐसे लोग भी आत्मनिर्भर ही है।
जो एक पव्वे रुपयो में वोट बेच डालते है।
एक वक्त की रोटी में झंडे बेनर थामते है।
खाने जुगाड़ में जुलुसो में नारे लगाते है।

काश आप आत्मनिर्भर हो अपना पेट भरते।
भ्रष्टाचार छोड राजनीति में सेवा करते रहते।
छोड़ देते आप भी लालच सत्ता में रहने का।
समझ जनता की नब्ज़ संकल्प लेते सेवा का।

अपराध मुक्त यह भारत तब जरूर हो जाता।
सोने की चिड़िया ये देश फिर कहला जाता।
रहते साथ सब वैरभाव न मन में पनप पाता।
देश पहले से ज्यादा आत्मनिर्भर हो जाता।

15. ट्रम्प की हार और झूठ

हार होना काफी नही हार मानना पड़ता है।
कहावत है मियांजी गिरे पर टांग ऊंची रही।
पहले हारने पर हार मानने की जरूरत न थी।
आज हारकर हार न माने वह ट्रम्प होता है।

झूठ का जन्मदाता कौन, ढूंढना मुश्किल है।
झूठ के महान प्रयोग करने वाले ट्रम्प ही है।
पहले झूठ प्रयोग होता था झूठ छुपाने में।
अब झूठ बोला जाता सच को झुठलाने में।

पहले झूठ पकडे जाने पर शर्मिंदा होते है।
आज झूठ पकड़े जाने पर भी गर्व करते है।
शांति नोबल पुरस्कार ट्रम्प को नही मिला।
झूठ या हार न मानने में,गिन्निज़ बुक तो है।

16. बदलता जमाना

जमाने के बहाव मे क्या क्या मंज़र नही देखे।
बदले समय में लोगो के व्यवहार बदलते देखे।
बुजुर्गों से मार खाते अब बच्चो से डरने लगे।
बुज़ुर्गों की इज्जत की अब सामने बोलने लगे।

गोबर की पेंटिंग देखी, मिट्टी के बने घर देखे।
चूल्हों के ईंधन में लकड़ी कंडे कोयले देखे।
जमीन पर बैठ दिए की रोशनी में पढा करते।
क्लास में नीचे बैठ पढते टीचर के डंडे देखे।

गली गली घूमते रहते गिल्ली डंडे कंचे खेले।
पांच का घी देखा,पाँच सौ में ग्रेजुएट हुए देखे।
छोटे छोटे गांव देखे और बड़े बड़े शहर देखे।
बैलगाड़ी में बैठे हवाई जहाज के सफर देखे।

लिखते पोस्टकार्ड पोस्टमेन का इंतज़ार देखा।
पोस्ट को ईमेल में व्हाट्सएप्प में बदलते देखा।
जमीन पर बैठ खाना खाते,प्लेट में चाय पीते।
केरोसिन लैंप से पढ़कर बोर्ड के एग्जाम देते।

काले फ़ोन से चले स्मार्ट फोन तक सफर देखा।
हाथ से लिखे एकाउंट कंप्यूटर में बदलते देखा।
केमरे से फ़ोटो खींचकर रोल धुलवाते देखा।
फिर मोबाइल पर ढेरो सेल्फी का ट्रेंड देखा।

मौहल्ले में त्योहार मनाते लोगो के हुजूम देखे।
दूर दूर जाकर टीवी पर फ़िल्म समाचार देखे।
बड़े मैदानों में खेलते, मोबाइल पर खेल देखे।
कमरे में मीटिंग से वर्चुअल मीटिंग के दौर देखे।

घर घर बिजली,और गांवो में नल लगते देखे।
छोटी जरूरतो के लिये जीते मरते लोग देखे।
टाइमपास में नावेल पढे , नेट सर्फ करने लगे।
दावात कलम से लिखते ,अब टाइप करने लगे।

बिना पंखे एसी के गर्मियो में छत पर सो जाते।
भयंकर सर्दी में बिना हीटर,रजाई में घुस जाते।
आज एयरकंडीशन रुम में करवट बदलते रहते।
बिना बिजली जीये अब बिजली की तड़प देखे।

रेडियो पर कभी विविधभारती कभी बिनाका सुने।
आज फ़िल्में समाचारो को मोबाइल में देखने लगे।
दादी से कहानी सुनी,अब मोबाइल पर पढ़ने लगे।
हजारो की डीजीटल भीड़ में,अब सब अकेले दिखे।

17. लोकतंत्र का प्रयोग

लोकतंत्र का प्रयोग हुआ, देखते पहाड़ खड़ा हुआ।
उसमे थी एक चुहिया आंदोलन का शंखनाद हुआ।
पहाड़ खोदने वालो को वक्त पर क्लाइमेक्स हुआ।
चुहिया नसीब हो गयी पहाड़ तो कोई उठा ले गया।

टारगेट वह हुआ जिसका भाग्य पहाड़ में दबा हुआ।
पर आका खेल देख रहे जैसे नवाब मुर्गे लड़ा रहा।
खेल फिर ऐलान हुआ, किसान सड़क पर आ गया।
समझाओ किसानों को एक आंख से खुदा दिख रहा।

क्यो अफ़सोस होता वो सडको पर जीवन बिता रहा।
नही कमाता अपने लिए,क्या कमाएगा देश के लिए।
समाजवाद के भरोसे अर्थवयवस्था नही बढ़ सकेगी।
अम्बानी अडानी के भरोसे,पांच ट्रिलियन हो सकेगी।

अपनी समझ को बढ़ाने के लिए दूर कहीं जाना नही।
साल के फ्री जिओ नेट में करोड़ो लोग धंधे लग गए।
आग में बीएसएनएल और अमटीएनल स्वाहा हो गए।
खूब मजा लिया था फ्री का अब खर्चा गले आ पड़ा।

मदारी डुगडुगी बजाएगा जमूरा नया कुछ लाएगा।
कभी तबलीगी आएगा कॅरोना उससे फैल जाएगा।
सीएए का विरोध करने फिर छात्र सड़क पर आएगा।
आंदोलन कर मार वो खायेगा जैल भी वो ही जाएगा।

आग लगेगी जब दूर कहीं तमाशबीन तो आप रहोगे।
आग लगेगी खेतो में तो मंडी दुकानो व्यापार जलेंगे।
जमाने में कहा जाता आओ बैठे मन की बात करेंगे।
आज भाग्यविधाता कह रहे,अपने मन की बात करेंगे।

18. वेक्सीन का पपलू उर्फ बबलू

एकसौ तीस करोड़ को अब इंतज़ार है।
खुशी की पल जल्द ही आने वाला है।
आठ महीने की अंधेरी रात के बाद।
अच्छे दिन वाला सवेरा आने वाला है।

सब करे तैयारी कहाँ से आनेवाला है।
कोई बोले अमेरिका, यूके बताता है।
कोई बोले पूना,हैदराबाद भी बताता है।
या अहमदाबाद लैब से आने वाला है।

तैयारी में कोई झब्बा शर्ट सिला रहा।
कोई झूले का इंतज़ाम करने वाला है।
थाली सजा रहा,दिया जलानेवाला है।
वह सहारा बन तारणहार आनेवाला है।

कोई टीका बांटने की जुगत में लगा है।
कयास लगे पहले कहाँ आने वाला है।
कभी लग रहा ये बिहार जाने वाला है।
कह रहे बंगाल चुनाव में आनेवाला है।

आपदा में अवसर को क्यो भूले कोई।
ट्रम्प को चकमा दिया, हारने पर आया।
बिहार सही पकड़े, चुनाव में जो बांटा।
बीमारी जाए न जाये वोट तो आ गया।

कोई बताता समय से पहले आ रहा है।
कोई सिजेरियन का आतंक फैला रहा है।
बोला कोई अभी तो दिल्ली बहुत दूर है।
पैदा होने पहले कानून में उलझा रहा है।

जब बबलू आएगा,वोही सबको बचाएगा।
न रहो भरोसे लेकिन,आत्मनिर्भर हो जाओ।
जो पैदा नही हुआ, उसके भरोसे कम रहो।
खुद मास्क संभालो सुरक्षा में लग जाओ।

19. समय इंतज़ार करेगा

बस में चढ़ने रेलटिकट की लाईन में लगने की।
रेस्टोरेंट में खाने की, कभी शौच पेशाब जाने की।
स्टेशन में अंदर जाने की, कभी बाहर आने की।
पहली बार देखी बम्बई में, ये बहार लाईनो की।

कभी कभी लाइन इतनी इतनी लंबी होती थी।
पहुंचने पर मालूम होता गलत लाइन पकड़ी थी।
सुविधा बढ़ी हजारो में, लोग बढ़ते गए लाखो में।
सुविधा कम पड़ती गयी, लाइने लंबी होती गयी।

कौन कहता विकास नही, ये सालो से होता रहा।
लाइने तो हमेशा से हर जगह बढ़ती चली गयी।
नई लाइने और इज़ाद होने लगी अस्पतालो में।
जलनेवालो की लाइन लगने लगी शमशानो में।

काश मरनेवाले थोड़ा समय का इन्तज़ार करते ।
लाइन की साइज़ देखकर मरने का विचार करते।
मरने से पहले अपना नाम रजिस्टर में दर्ज करते।
मरने का विचार भी अपना नम्बर आने पर करते।

20. कामरा क्या मरा

दिल्ली के वातावरण में प्रदुषण फैल रहा।
कोई समाज का दुश्मन प्रदुषण फैला रहा।
ऐसी हवा चलने लगी सांस लेना था दूभर।
आवाज एक गूँजने लगी कामरा अब मरा।

सदियों से जल रहे पटाखे और परालियां।
प्रदुषण में फैला ऐसा धुंआ कभी ना उठा।
भूषण पटाखा जो कामरा ने यूज़ किया।
धुँआ देख सब बोल पड़े कामरा अब मरा।

उदारवादी भी अब संकीर्ण नजर आते है।
सुप्रीम कोर्ट को वह संकीर्ण कह जाते है।
थोड़ा फ़ेवर कर प्रियॉरिटी पर क्या रखा।
कोर्ट को गुनाहगार बता,कामरा अब मरा।

सुप्रीम था कोर्ट उसे बनाया सुप्रीम जोक।
दबाई जो दुखती रग चीख पडा कहराकर।
जो न्याय वो कर पाता उतना करता जाता।
फंसी टांग देख लोग बोले कामरा अब मरा।

कॉमेडियन कॉमेडी करते अच्छा लगता है।
उसका गंभीर बोलना न्याय को खलता है।
क्या हक उसे महात्मा गाँधी को बदलता है।
झंडा बदले तब लोग बोले कामरा अब मरा।

दो टवीट का भाव एक रुपया ही समझ बैठा।
नादान बनकर उसने पचास ट्विट लिख मारा।
अवमानना की कार्यवाही कोर्ट शुरू कर रहा।
माफी नही मांगने पर बोले कामरा क्या मरा।

कोर्ट अंधा हो गवाहों के बयान पर चलता है।
जो संज्ञान में आये उसी पर न्याय करता है।
आपदा मे अवसर पा जज को ऑडियंस करा।
कॉमेडी शो ऐसा सब बोले कामरा अब मरा।

अदालत की अच्छी ऑडियंस उसे पसंद है।
सुप्रीम कोर्ट में वक्त मिल पाना तो दुर्लभ है।
प्राइम लाउडस्पीकर रोकने का साहस किया।
ऐसी कॉमेडी देखकर बोले कामरा अब मरा।

दूसरों की निजी स्वतंत्रता में कोर्ट चुप था।
बिना आलोचना के वो कैसे नहीं गुजरता।
माफी मांगने की कुणाल मंशा नहीं रखता।
राय ना बदली लोग बोले कामरा अब मरा।

अवमानना याचिका प्रायोरिटी में आएगी।
अन्य मामलों में लोग किस्मतवाले नहीं।
काश कोर्ट सुने नोटबंदी कश्मीर याचिका।
कोर्ट दंड देगा लोग बोले कामरा क्या मरा।

21. विनाश का रास्ता ये

विचारधारा की आंधी इस कदर चलने लगी।
वामपंथी दक्षिणपंथी जान के दुश्मन हो गए।
कई खुश हुए कि सदियों बाद उग्रवादी बने।
शिक्षाविद जब चुप रहे विनाश के रास्ते खुले।

सत्ता के दबे अरमानो को चिंगारी जब मिली।
तहस नहस हुआ सब भाईचारे की नींव हिली।
दूसरे को नीचा दिखाने में ऐसे गिरते चले गए।
जनता चुप रही विनाश के रास्ते खुलते गए।

सत्ता छिनने बचाने का दौर जब शुरु हुआ।
पैसे और सत्ता के लालच में अंधे होते गए।
सत्ता यहां मुख्य और जनता गौण हो गयी।
वृद्ध नेता चुप रहे विनाश के रास्ते बढ़ते गए।

सता को खेलते देखकर ग्लानि हो जाती है।
पता नही कितने ही यहां बेमौत मर जाते है।
घर उजाडे जीवन को बरबाद करते चले गये।
अहम के इस खेल में यहां विनाश करते गये।

अभिव्यक्ति की आजादी जिसने भी चाही।
उसकी जबान बंदकर जेल की सजा हुई।
सत्ता के खेल ने पत्रकारिता शहीद हो गयी।
पत्रकारो ने साथ दे विनाश आमंत्रित किया।

न्यायविद समझते रहे न्याय अभी जिंदा है।
वो नही बिकता,पर वकील बहुत महंगा है।
सत्ता के संग में न्याय पंगु नजर आता गया।
न्यायविद जब चुप रहे विनाश बढ़ता गया।

सत्ता के खेल में रसूखदार कुछ ऐसा फंसा।
सत्ता की नींद में भी जबरदस्त खलल पडा।
अन्याय से बेखबर,न्याय व्यवस्था चौंक पड़ी।
जज अब बोले पर विनाश पहले चल रहा था।

न्याय ने अंगड़ाई ली अपनी आवाज बुलंद की।
घर शीशे का था तो क्या अब पत्थर मार दिया।
जागे भी इतनी देर से, जब आग घर तक आई।
सोचते विकास जिसे,विनाश के रास्ते ले आयी।

काश यह अहसास, थोड़ा पहले ही हो जाता।
खोया जिन्होने इस खेल में,वे यहां जिंदा होते।
न्याय से पहले बस, आप फिर सो नही जाएं।
कर लो न्याय अब शायद विनाश से बच जाएं।

22. अपनी ढपली अपना राग

आया एक फ़क़ीर आया नगरी में छेड़ा अपना राग।
सभी रंगे उसके रंग मे बजा रहा अलग अलग राग।
ढोल की पोल समझ न आये। बज रहे ऐसे ऐसे राग।
लोग का मन मोह रहा था अपनी ढपली अपना राग।

दुखती रग पहचानकर बजा रहा था ऐसे ऐसे राग।
लगने लगा था सबको अब होगा हर एक का इलाज।
अलापे जब राग विकास का, लगे आ गया पूंजीवाद।
हर कोई हो गया अमीर यहां आने लगा राम का राज।

बड़े पैसेवाले मित्र बन आये दिखाये ऐसे ऐसे कमाल।
मोह लिया दिल सबका, बेच रहे अपना अपना माल ।
देखते देखते छा गए ऐसे करते गए और भी कंगाल।
हाथ मलते रह गए सभी, ढेला न आया किसी के हाथ।

बदला राग गरीबी का सबको लगा आ रहा साम्यवाद।
घर में गैस बिजली मिली,घर मिले लोग हुए मालामाल।
राग जब छाया चारो ओर , लगा आया रामराज्य आज।
मोह लिया मन कुछ ऐसा, घर घर खुशी की लहर ऐसी।

रोजीरोटी नौकरी सब गयी। फिर हुए ठन ठन गोपाल।
मन हारे, तन का कपड़ा भी गया। फिर हो गए कंगाल।
बदल रहा था राग ढपली पर, अब आया राग सांप्रवाद।
हम ज्यादा है फिर भी क्या, अपने घरो मे सदा डरते रहे।

हक है इस जमीन पर हमारा हम किसी से यहां क्यो डरे।
फैला जहर कुछ ऐसा निकल पड़े सब लिए नफरत साथ।
भाई भाई से लड़ा,पड़ोसी को पडोसी का दुश्मन बनाया।
सब खुश थे,सबको लग रहा, आज हमारा हितैषी आया।

बदल गया राग ढपली पर।अब आया राग विस्तारवाद।
देख रहे थे सब, खोल बैठे दो हज़ार साल का इतिहास।
देख रहे अखंड भारत में पीओके अक्ष चीन का भाग।
ख़ुशी ख़ुशी तैयार हुए लेने को पंगा अब चीन के साथ।

छोटे पड़ोसी आंख दिखाये। बज़ रही तालियां सब और।
होश किसे यहां किसीका,मस्त अपने अपने रंग में आज।
बदल गया राग ढपली पर। छाने लगा अब विकासवाद।
आत्मनिर्भर हो गए सब लोग,था काम धंधा सबके पास।

कर रहे थे जो नौकरियां, वो खोने लगे हो गए बेरोजगार।
बदलाव की चली ऐसी हवा,अच्छे बैंक सब डूबने लगे।
विकास के नाम पर सरकारी कंपनियां सब बिकने लगी।
अर्थव्यवस्था कुछ ऐसी बिगड़ी, पुराने रिकॉर्ड सब टूटे।

बड़े बुजुर्ग बोल रहे ढपली तो बोल रही इसमे है कई राग।
बहुरूपिया दिखा रहा करतब। भला ना होगा सुन ये राग।
पर होश किसे था फुरसत किसको सुने आपस की बात।
खो रहे सब मस्ती में बज रही अपनी ढपली अपना राग।

23. अव्यवस्था की धांधली

गुजरात अस्पताल में फिर लगी है।
आग अस्पताल के पीछे पड़ी है।
जैसे गुजरात मॉडल की कड़ी है।
गुजरात सरकार के पीछे पड़ी है।

कोई तो यहां ये सब कर रहा है ।
एक एक अस्पताल जल रहा है।
जहाँ कॅरोना इलाज चल रहा है।
क्यो मरीज जलकर मर रहा है।

अस्पताल में क्या सुविधा कमी है।
या फिर अव्यवस्था की धांधली है।
अग्नि शमन की सुविधा अभाव है।
या फिर प्रबंधन कमियां ढक रहा है।

अगस्त से अबतक चौथी घटना है।
कारण अभी पता नही लग रहा है।
निर्माण सेफ्टी रूल का उल्लंघन है।
या कहीं भ्रष्टाचार का अनुमोदन है।

सुप्रीम कोर्ट इस पर स्तब्ध हो रहा है।
सरकार से कारण तलब कर रहा है।
सरकारी वकील आ जवाब दे रहा है।
कोर्ट को जवाब हजम नही हो रहा है।

कोर्ट में अब फटकार दौर चल पड़ा है।
मगर असर किसी पर नही हो रहा है।
सचिव फायर सेफ्टी निर्देश दे रहे है।
सरकार यहां एक कमेटी बना रहे है।

नही समझ रहा कोई किसको जगना है।
मरीज के भाग्य में बस कैसे तो मरना है।
क्या फर्क पड़ता है मरकर भी जलना है।
या फिर वो इस तरह जलकर मरता है।

24. मुद्दो की राजनीति

बिहार इलेक्शन में तेजस्वी अकेला था।
डरावना भूत, अनुभव का अभाव था।
भूत बदलने सत्ता पाने का हौंसला था।
नौकरी सिंचाई पढाई कमाई एजेंडा था।

महंगाई बेरोजगारी तालाबंदी का दर्द।
लंबे सुशासन में जनता ने झेला था।
राजनीति तो परिवार में सीखी थी।
विपक्ष उसे जंगल युवराज बोला था।

महारथियों ने मिलकर उसे घेरा था।
नतीजो को अपने पक्ष में मोडा था।
जीतकर वे सत्ता में काबिज हुए थे।
छद्म शौर्य के बल पर वो जीत रहे थे।

ऐसी जीत क्षणिक खुशी ना दे पायी।
सत्ता की समीकरण में उलझते गए।
सहयोगी गले मे हड्डी सा फंसता रहा।
विपक्ष हर ओर से टांग खींचता रहा।

देखते सपना सबका हौसला तोडेंगे।
युवराज रहे जिन दिलो में उसे तोडेंगे।
वीरगति तो अभिमन्यु को मिल गयी।
जीते मगर बधाई दूसरे को मिल रही।

छ्द्म राजनीति छोड़ मुद्दो से जुडेगा।
दिलो पे राज करे, सेहरा उसे बंधेगा।
अपनी मजबूरियों के पीछे छुपे रहेंगे।
जीते भी तोअपनी नजर में बौने रहेंगे।

25. मुर्गी बैठत रही, अंडे देवत नही

जादूगर के हेट से तीन चूजे निकल आये।
किसान परेशान कोई न उसे पकड़ पाए।
किसान की नियति में ये सब नया नही।
मेघ बरसते नही, फसल पनप नही पाए।

सरकार कानून से हिलने को तैयार नही।
उगल निगल न पाते,गले में फांस हो रहे।
संशोधन संशोधन कह,वे उसे दोहरा रहे।
शराब है वही नए कनस्तर में परोस रहे।

किसान कानून में गारंटी मांग कर रहे।
पीआर गेम चल रहा धारणा बदले नही।
किसान कहे मुर्गी बैठ रही,अंडे देत नही।
कमजोरी,अडानी,अंबानी जमाखोरी बने

किसान विरोध सिंघू सीमा पर फैल रहे।
सरकार लिखके दे किसान मानते नही।
प्रस्ताव निष्ठाहीन उसे अपमान बता रहे
प्रस्ताव सर्वसम्मति से खारिज कर रहे।

खेत कानून जमाखोरी की अनुमति दे रहे
कॉर्पोरेट नए कानूनों से फायदा उठा रहे।
खेल अंबानी अदानी का अब समझ रहे।
किसान Jio उत्पादों का बहिष्कार करे।

हाईवे सड़क रोक टोल आज़ाद कर रहे।
साथ बीजेपी के मंत्रियों को घेरने जा रहे
मोर्चा संभाल लिया सरकार किसानों ने
न सरकार आगे बढ़े न किसान पीछे हटे।

26. इधर उधर की बात ना कर

कभी विपक्ष भड़काता या आतंकी आ जाता।
कभी खलिस्तान या कभी पाकिस्तान लाता।
कभी मुद्दे भूलकर और चीन बीच मे ले आता।
सीधे है वे आक्रोश को बढ़ाने का काम न कर।

चर्चे बहुत छप रहे है अब विदेशी अखबारों में।
भारत बढ़ रहा है साम्प्रदायिकता के विचारों में।
कैसे बच निकलता आरोपी न्याय के हाथों से।
आग में और अब घी डालने का काम न कर।

इसको उसको उलझाता, विपक्ष के गुण गाता।
जो होश नही अपने, वो किसे क्या भड़काता।
विपक्ष में कहां ये ताकत वो गुमराह कर पाता।
ईधर उधर भटकाने की अब और बात ना कर।

किसान कहे अम्बानी अडानी से गुमराह होता।
कहाँ जाएगा जुलुस अब अन्ना भी आनेवाला।
सवाल सही कीमत देने का वादा गुल हो जाता।
दिल खोल बैठे किसान है किसान से बात कर।

खेलती वेस्ट इंडिया कम्पनी उसे बढानेवाला।
कानून बनने से पहले गोदाम कैसे बन जाता ।
कॉर्पोरेट के हाथों जमाखोरी के रास्ते बनाता।
सीधा मुद्दे पर आजा और काम की बात कर।

पिछे हटना नही चाहता आगे बढ़ने नही पाता।
छीन ली जो जमीन चीन ने उसे ला नही पाता।
हरियाणा बीच आता मुख्यमंत्री कैद हो जाता।
पाला पड़ा अब किसान से टकरामत बात कर।

27. किसान का दर्द कहाँ है

दर्द कहाँ है अगर सौ लोगो पर एक व्यापारी है।
सवा करोड़ व्यापारी पांच करोड़ पलनेवाले है।
बिचौलिओं के धंधे का विकल्प सोचा है क्या।
या फिर वे पकोड़े तलनेवालो की कतार में है।

मत सोचो किसानों को कॉरपोरेट क्या देगा।
किसान मांग रहा काम से कम लागत तो मिले।
हर व्यापारी बिचौलिआ वही ताली बजाएगा।
बर्बादी किसकी हो रही, वो तो जश्न मनाएगा।

जग ने पूंजीवाद का यह खेल सदियों पुराना है।
इसका कोई वैक्सीन कभी नही आने वाला है।
ईस्ट इंडिया कंपनी ने जब देश पांव फैलाया था।
लोकल धंधे खत्म कर साम्राज्यवाद बढाया था।

28. विश्व प्रदुषण से युद्ध

दिल्ली के वातावरण में प्रदुषण फैल रहा।
कोई समाज का दुश्मन प्रदुषण फैला रहा।
ऐसी हवा चल रही सांस लेना हुआ दूभर।
तीन से तीस किलोमीटर दिल्ली बढ़ गया।

स्मार्टसिटी छोड़, सिटी बनाने की सुध न थी
कहाँ गए टाउन प्लानर, कहाँ तन्त्र सो गया
आकांक्षाओं की अंधी दौड़ में ऐसे भाग रहे
आपके साहस ने भविष्य आग में झोंक दिया

प्रदूषण में रहना समाज को रास आता गया
हर आर्थिक विकास प्रदूषण बढाता गया
बिना प्रदूषण समाज की कल्पना न हो रही
अब लड़ने की कमान बच्चों को लेनी पड़ी

16 साल की बच्ची धरती बचाने कूद पड़ी।
जलवायु परिवर्तन की जागरूकता फैला रही
स्ट्राइक फॉर क्लाइमेट का कैंपेन चला रही
कैंपेन में बच्चों की संख्या 36 लाख हो गई

कार्बन उत्सर्जन घटाने की पहल घर से की
माता पिता को कम हवाई यात्रा कीअपील की
उसके प्रयासों का समाज ने भी संज्ञान लिया
ग्रेटा नोबल शांति पुरस्कार में नामजद किया

अगर लोग नहीं बचेंगे तो स्कूल कैसे चलेंगे।
जिस उम्र में स्कूल में होना था वो निकल पड़ी
वह जो कर रही स्कूल जाने से ज्यादा जरूरी
बड़ी-बड़ी कांफ्रेस आयोजनों में हिस्सा ले रही

अमेरिका में सम्मेलन ग्रेटा ने संबोधित किया
मौजूदा कोशिशें धरती बचाने को नाकाफी हैं
इंटरव्यू में ट्रंप से मिलने का इनकार कर दिया
उसका कहना था यह समय की बर्बादी होगी

संयुक्त राष्ट्र जलवायु सम्मेलन संबोधित किया
नेताओं पर नाकाम रहने का आरोप लगाया
पूछ रही आपने ऐसा करने की हिम्मत कैसे की
अपनी पीढ़ी से विश्वासघात का आरोप लगाया

हमारा यह संदेश है कि हम आपको देख रहे हैं
आप जन जीवन से खेलने का दुसाहस कर रहे
लोग त्रस्त मर रहे हैं, परिस्थिति ध्वस्त हो रही
विश्व सामूहिक विलुप्ति के कगार पर पहुंचा रहे

नेताओ की खोखली बातों ने बचपन छीन लिये
आर्थिक विकास की काल्पनिक कथा सुना रहे
प्रकृति से आप खेलो संतान खामियाजा भुगते।
माँ बाप के पाप की सजा संतान भुगतती रहे।

29. क्या अब भी आशा लगाए बैठे है

आईटी सेल अपराध पर फेकन्यूज़ चलाए
ट्रोल के डर से हर जबान बंद होती जाये
दिल के कोने से ये आवाज़ उठनी चाहिए
क्या अब भी समाज से आश होनी चाहिए

सोशल मीडिया सत्य को झुठलाने में लगे
कानून डीएम एसपी अपराधी के संग मिले
पत्रकार केवल अपराधी को बचाने में लगे
सब ओर आवाज़ उठे अब आश कैसे र

अपराधी कानून के आगे आत्मसमर्पण करे
कानून दिन दहाडे अपराधी को गोली मारे
उसकी नेक्सस के सारे राज जब दफन करे
दिल मे आवाज उठे, क्या अब भी आश करे

न्याय चाहिये वोही न्याय का शिकार हो जाये
अपराधी की जगह विक्टिम जेल चला जाये
पत्रकार अपराधी के स्वर में स्वर मिला बोले
तब कोई यह बताए अब भी आश बच जाए

पत्रकार एंकर विक्टिम को कटघरे में ले आए
अपराधी ताकतवर विक्टिम कमजोर हो जाए
जाति बिरादरी अपराधी के लिए पंचायत करे
तब आज़ उठनी चाहिये आश कैसे बाकी रहे

अबला का चीरहरण दबंगो के समाज मे हो
किस मुगालते में जीते अकेला कैसे सक्षम हो
क्या यह आवाज़ विक्टिम के लिए उठ पाए
एक शोर उठे सब ओर कैसे आश बाकी रहे

अपराधी के फ़ेवर में हैश टैग चलने लगे
सोशल मीडिया उसको बचाने कैंपेन करे
जनता अपराध से बेखबर और मौन रहे
तब खामोशी पूछे, अब भी आश बची रहे

अपराधी आजाद और न्याय बेबस हो जाए
जहां केस नही वहां केस खड़े करते जाये
क्या अब भी विक्टिम को टूटते समाज मे
न्याय मिल जाये ये आश कहीं बची रह जाए

30. करोना महाभारत

महाभारत का उद्घोष हुआ, अठारह दिन नही कहा।
करोना महाभारत में,अठारह दिन का आगाज़ किया।
न विज़न न प्लानिंग का सहारा,कहना सो कह दिया।
डिजास्टर टीम, नही प्लानिंग कमीशन का काम था।

गहन जंगल मे भटके,एक सौ तीस करोड़ देशवासी
बढे अनजान राहो पर, लिए चाह पाने को किनारा।
हर एक दूसरे से जुड़ा, जैसे अंधा अंधे का सहारा।
हुक्मरान बड़े बेखबर, देश किनअभावों में जी रहा।

लड़ने का ठाना करोना से, सड़क बाजार बंद किया।
हर इंसान को अपने घरो में, सत्ता ने कैद कर दिया।
न सोचा लोग सडको पर,उनका क्या अंजाम होगा।
कहाँ से आएगा दानापानी, कैसे सब इंतज़ाम होगा।

दर्दनाक युद्ध तब हुआ,फैक्ट्री व्यापार सब बंद हुआ।
कामगारों की सेना निकली,अपने घर को कूच किया।
न जाने को साधन सडको पे,न खाने को पानी दाना।
घरो फ्लैटमें रहनेवाले क्या जाने बेघरों को दर्द हुआ।

अफसोस होना था लोगो की मजबूरी पर नही हुआ।
नौकरी काम के लिए,हर राज्य दूसरे राज्य पर टिका।
आक्रोश काफी किया जब कानून पालन नही हुआ।
अत्याचार की इंतहा हुई,पुलिस मार को सहन किया।

आज अठारह दिन का युद्ध आ गया इस मुहाने पर।
लड़ते सब अठारह पक्षो से अग्रसर अठारह माहो में।
आसार नजर नही आ रहे, अब तक युद्ध विराम का।
क्योकि इस युद्ध में सामना है अनजान कातिल का।

31. हिंदुत्व का तकाजा

हिंदुत्व मुखर करो, अत्याचार का प्रतिकार करो।
सत्ता के कंधों पर चढ कॉमवाद मत खड़ा करो।
सदियों से कोई क्रांति सत्ता की गोद से नही हुयी।
अपने बाहुबल पुष्ट कर,आततायीयो को मार दो।

धार्मिक उन्माद में जिंदगियां तबाह हो जायेगी।
आग को समेटने में कई सदियां निकल जायेगी।
आग लगेगी बस्ती में तो कितने घर बचा पाएंगे।
कैसे बचेंगे जब सबके घर इसकी जद में होंगे।

बदले की भावना में कहां राष्ट्र को लेकर जाएँगे।
नया राष्ट्रवाद क्या हिंदुत्व को इतिहास दे पाएगा।
आत्मरक्षा में हिदुत्व सदैव ही ज्यादा सबल था।
आततायी को मारने को समुद्र पार किया था।

कौन चाहेगा राष्ट्र में हर एक दूसरे से डर जाएगा।
आधुनिकता का यह खेल आदिम युग ले जाएगा।
एतिहासिक खूनी क्रांतियो से सबक लेना होगा।
जन कल्याण से हिंदुत्व को सबल करना होगा।

सत्ता के बेलगाम अन्याय हर समय होते आये है।
सत्ता की फितरत से इतिहास बदल नही जाते।
क्या सोचते आज गद्दारो के वंशज से बदला लेंगे।
सत्ता के जहर से अब क्या नया समाज बना लेंगे।

शासन की बैसाखियाँ नही।अपने पैर मजबूत करो।
गांधी मारना क्रांति नही,उसे कोसकर बौने दिखोगे।
इतिहास में तानाशाहों ने जनता को गुमराह किया ।
सता के अहंकार में राष्ट्र कौमी दंगो में झोंक दिया।

पृथ्वीराज ने मोहमद गौरी को सत्रह बार माफ किया।
डरकर या कमजोरी से नही। हिन्दत्व का तकाजा था।
साम्राज्य सूर्यास्त न देखा।लाठीवाले को नोट किया।
सत्ता के सामने खडी आवाज़ का लोहा मानना पड़ा।

हिंदुत्व का गौरवमयी इतिहास क्या कहीं भुला दिया।
एक आततायी को मारने राजा समुद्र पार कर गया।
राम की दुहाई क्या क्षमा दिखाने का साहस किया।
समुद्रपार शत्रु को मार राज उत्तराधिकारी को दिया।

सत्य के लिए जब एक राजा ने राजपाट त्याग दिया।
कबूतर की जान बचाने राजा ने स्वमांस दान किया।
राजा आजादी के लिए घास की रोटी स्वीकार किया।
राजा ने जीतकर भी शत्रु को सत्रह बार माफ किया।

हिंदुत्व के नाम में हर राजा का त्याग नज़र आएगा।
इतिहास दोषी नही गुलामी दोष का नतीजा नही था।
पांच गांव के लिए राजपाट छोड़ना भी कबुल किया।
डरकर नही हारे सत्ता से महाभारत स्वीकार किया।

गांधीवाद जीवन मे उतारो जो रिसर्च का विषय रहा है।

क्रांति रक्तरहित हो सकती यह गांधीवाद सीखाता है।
एक हुंकार पर लाखो निकले न हिन्दू था न मुसलमान।
सिर्फ निकले देशवासी।कौमी एकता की मिसाल बने।

गांधीवाद कोई संयोग नही एक अनोखा प्रयोग ही था।
ढूढते गांधीवाद की विसंगति क्या वे हिंदुत्व समझते है।
गांधी को मारकर क्या गाँधी के विचार को मार पाएंगे।
गांधी तो एक सोच है जोअहिंसा से जीना सिखाते है।

गांधी बसा जनता के दिल में हिंदुत्व का पाठ पढ़ाया।
सता से सविनय अवज्ञा रक्तरहित आंदोलन बताया।
क्रांति का ये स्वरूप इतिहास में पहली बार आया।
विश्व मे अहिंसा शांति और सत्य की ताकत बताया।

बंटवारे की आग ने समाज को आजीवन जख्म दिए।
सदियों तक लोग अपने एवं अपनो केलिए जलते रहे।
पुराने इतिहास कुरेदकर अब और उन्माद ना जगाए ।
नफरत का रास्ता छोड़ दो रोटी शकुन मुहैय्या कराए।

लोकतंत्र का सन्मान करे सता से जनकल्याण करे।
इतिहास में वह मुकाम बनाये जहां सदियां याद करे।

32. खरीद फरोख्त

क्या क्या खरीद फरोख्त में शामिल न हुआ।
क्या नही आया बिकने के लिए बाजारो में।
सावन के अंधे को हरा ही हरा दिख रहा।
आया सौदागर सपने बेचने अब बाजारो में।

घर के नल में पानी आने लगा अब हफ्ते में।
पानी बोतल में बिकने लगा अब बाज़ारो में।
अजीब खेल होता जा रहा अब जमाने मे।
पानी मिलने लग रहा अब दूध के भावो में।

जरूरत का सामान मिलता वाजिब दाम में।
आज फालतू समान वाजिब नज़र आता है।
किराना कपड़े जरूरते कम होती चली गयी।
बाजार में तीसरी दुकान मोबाइल होती गई।

पहले हर गांव खेडे में लगते पशुओ के मेले।
आज विधायक बिक रहे लोकतंत्र के ठेले में।
जीने लगे लोकतंत्र जो बिक रहा बाज़ारो में।
अब तो हिचक कहाँ बची देश बेचनेवालो में।

दुनिया में दोस्त बनने लगे हथियार बेचने को।
लोकतन्त्र चलता दोस्त की दुकान चलाने को।
बाजार में अब न लोकतंत्र न सेवा समाज की।
यहां हर सेवा हो रही अब सौदो के जुगाड़ की।

सब बिकेगा यहां जो दाम देंगे वे ही खरीदेंगे।
अब एजेंट यहां पर अस्मत बेचने को मिलेंगे।
जनता के हक बिकने लगे खुले बाज़ारो में।
लोगो के ईमान बिकते सिक्को के पैमानों में।

लुभावने डिजिटल ट्रेड में बिकते बैंक सौदे।
ठग उठाईगीरे अब फैलने लगे इंटरनेटो पर।
कभी अखबार बिकते थे खबरे देने के लिए।
आज प्रकाशन पत्रकार बिक रहे स्टालों पर।

आय दुगुनी करने के वादे मीडिया में मिलते।
रुपये पव्वे के नाम पर जुमले वोट बिकते।
पब्लिक अंडरटेकिंग बिक रहे बेंक बिकते।
नुक्कड़ पर शौचालय के उपयोग बिकते ।

आज समाज सेवा का व्रत वह ऐसा ले रहे।
बदल डालेंगे समाज को यह प्रण कर रहे।
बिकते देखा समाज की सेवा को बाज़ारो में।
लोकतंत्र के खरीददार खड़े अब बाज़ारो में।

33. कॅरोना आया नया त्यौहार

जब नया कोरोना आया, जैसे नया त्यौहार आया।
जैसे नया मेहमान आया।करीना कटरीना सा आया।
पहली बार ऐसी बहार, घर मे सुनहरा ख्वाब आया।
जैसे नया ट्रेनर आया,नया बहुत कुछ सिखाने आया।

सुनहरा ख्वाब घर मे रह, नई डिश बनाने खाने का।
ताली थाली बजाने का, घर बैठ कॅरोना भगाने का।
नही कहीं जाने आने का, टीवी से चिपक जाने का।
मोबाइल से चिपके रह व्हाट्सएप्प ग्रुप बनाने का।

दीवली मनाई तीन हफ्ते गर्मी मनाई दो महीने में।
रिकॉर्ड तोड़ लंबी छुट्टी मनी पहली बार कॅरोना में।
इतनी तो ना शादी में मिली ना हनीमून में मनाई।
और तो और ना बीवी को इतना लंबा देख पाये।

लंबी दूरी रह गयी बस,हाल बैडरूम आने जाने का।
दिन भर बिना काम,बीस तीस चककर लगाने का।
ख्वाब कहाँ लंबे टिकते, हकीकत में ला पटकते है।
ख्वाब हवा हो जाते है तब पुराने लम्हे याद आते है।

अब सपना लगता है। जैसे मुम्बई शहर में बसते थे।
जब बाजार में जाते कंधे से कंधे का टकरा जाते थे।
लोकल ट्रेन में रोज़ चमगादड़ सा लटककर जाते थे।
लंबी यात्राओ पर जाते दूरतक पैदल घुम आते थे।

याद आते वे पल शादी में सजधज कर जाने का।
पेट कितना ही भर जाए फिर भी खाते जाने का।
दोस्त रिस्तेदारो से मिलआने और बिछड़ जाने का।
घूमकर नए शहरों में जाने सैर सपाटे कर आने का।

जिसे देखकर भागते,मौसम उसे निहारते जाने का।
ज्ञान ध्यान और कसरत प्राणायाम करते जाने का।
डर था किसी से मिलने जाने कोई मिलने आने का।
नही ङर फ़िज़ूल गुमाने का ना मन कुछ कमाने का।

34. मिस गाइड

कोई बोले जनता मिसगाइड हो रही है।
कोई मिस जनता को गाइड कर रही है।
नचनिया कोई मंच पर नाच दिखा रही।
कोई राजनीति में देश को नचा रही है।

कोई मुम्बई की तुलना पीओके से करे।
जंगलराज बिहार पुलिस श्रेष्ठ बता रहे।
कोई मिस राजनीति चंगुल फंस जाती।
मीडिया मिसगाइड करने में लग जाती।

बंगला तोड़ बीएमसी जोर दिखाती है।
कोर्ट बोले मिस को मिस हैंडल कर रहे।
मीडिया से कोई उकसाने में जेल जाए।
सुप्रीम बोले हाईकोर्ट मिसगाइड हो रहे।

राज्य सरकारे डंडे के जोर पर मुस्तेदी से
अपने अधिकार का उपयोग कर रही है
जनता कहे सरकारे मिसगाइड कर रही।
सरकारे बोलती जनता गाइड हो रही है।

अन्नदाता आकर अपनी रोटी मांग रहा।
कोई कहे मिस गाइड करते सब उसको।
वो कह रहा मिस गाइड वो होता रहा है।
मिसगाइड कानून एमएसपी हटा रहा है।

मीडिया की मिस टीवी पर गाइड कर रही।
कोई बोल रही मिस मिसगाइड कर रही है।
मिस बोले वो गाइड कर रोटी चला रही है।
मीडिया की मिसे गाइड बनकर छा रही है

कब कौन मिस छाए सोशल मीडिया में।
जनता को मिसगाइड करने लग जाती है।
जनता को खडा कर देते बीच बाजार में
जनता बनी मिस,चीरहरण करवा रही है।

स्वन्त्रता के दौर में जनता कहाँ जा रही है।
कभी जनता कभी कोर्ट मिसगाइड हो रहे।
कोई जनता कहती कोर्ट मिसगाइड हो रहे।
कोई बोल जाते कोर्ट मिसगाइड कर रहे है।

35. आओ छोटे बालक बन जाये

कभी गिर कभी संभले
थोड़े चलना सिख जाए।
आओ फिर शरुआत करे।
एक बार छोटे बालक बन जाये ।

गिल्ली डंडे कंचे लाये।
मिट्टी के घरोंदे बनाये।
दूर दूर तक चक्कर घुमाये।
आओ छोटे बालक बन जाये ।

दूर कितने निकल आये।
पुराने पैर के निशान ढूंढे।
चलने लगे उन निशानों पर।
आओ छोटे बालक बन जाये ।

टूटी स्लेटों पर अक्षर उगाए।
बड़े बड़े बस्ते उठाये ।
चलो एक बार स्कूल हो आये।
आओ छोटे बालक बन जाये ।

कभी घर मे डाँट खाये।
टीचर की छड़ी से डर जाए।
क्लास में बच्चो से बतियाये।
आओ छोटे बालक बन जाये ।

ना कोई चिंता थी ना तनाव ।
कहाँ गए वो सुनहरे पल।
आओ उन्हें एक बार लौटाए।
फिर छोटे से बालक बन जाये ।

कैसे बचपन फिसल जाता है।
जिमेवारी के बोझ तले दबे जाते।
क्यों नही पुराना अहसास जगाए।
आओ छोटे बालक बन जाये ।

36. नया रफाल बुक कराए

रफाल जो खरीदे वे तोअतिआधुनिक थे।
मगर दुश्मन ही कहाँ उसके लायक थे।
अब तो देश मे फिर से नया टेंडर मंगाये।
आओ नए किस्म के रफाल बुक कराए।

चीन पाक तो इन रफाल से डरता नही।
नेपाल श्रीलंका इससे खौफ खाता नही।
सारे दुश्मनो को सरहद तक लेकर लाया।
जबसे ये रफाल देश की सीमा में आया।

बाहर के दुश्मन तो सीमा तक चले आये।
घर के दुश्मन अलग से मोर्चा बनाते जाए।
जो हो जाए कारगर,वो हथियार ढूंढ़ लाए।
चलो कोई लेटेस्ट रफाल अब बुक कराए।

छात्रों ने अपना मोर्चा खड़ा कर दिया।
दिल्ली दंगो में उनका कैसा हश्र हुआ।
अल्पसंख्यक मार,उनपे इल्ज़ाम लगाये।
कर दे यह काम,ऐसा रफाल मिल जाए।

जब अल्पसंख्यकों के छत्ते छेडते रहे।
वे हर जगह शाहीनबाग बनाये गए ।
घेरकर दूरदूर से एनएसए में बंद कराए।
इन्हें पकड ले, ऐसा रफाल मिल जाए।

दलित अपना अलग मोर्चा खोल रहे।
आरक्षण की आवाज़ बुलंद कर रहे ।
जरूरी है अब इनकी आवाज़ दबाए।
आवाज़ दबानेवाला रफाल बुक कराए।

किसान दिल्ली को कुच करते जा रहे।
सडक पर ट्रोलर कंटेनर खड़े करते जाए।
बड़े बड़े गड्ढे तारबंदी सडको पर लगाए।
जो भीड़ रोक दे ऐसा कोई रफाल मंगाए।
पत्रकार अब आवाज़ दबा नही पा रहे।
अश्रुगैस छोड़े पानी की बौछार कराए।
ऐसा करे शोर यहां तक पहुंच नही पाए।
यह सब करनेवाला कोई रफाल ले आए।

सरकार के आराम में खलल ना पड़ पाए।
वे इज़ाद करे दुश्मन जो उसे डरा न पाए।
दुश्मन जो है अपने, इस घर मे पनप रहे।
मिले रफाल ऐसा अंदरवालो को डराए।

दुश्मन पर नई कोई रिसर्च करते जाए।
चारो और नए नए दुश्मन बनाते जाए।
अब दुश्मनो से कोई डर ही ना रह जाये।
आओ कोई नया रफाल खरीदकर लाए।

37. गली का क्रिकेट

गली में नया नया क्रिकेट का बोर्ड खुला।
किस घड़ी में अध्यक्ष का चुनाव तय हुआ।
बात बहुत छोटी थी, तिल का ताड़ हुआ।
सोशल मीडिया ने सब रायता फैला दिया।

रातो रात आग की तरह ये खबर फैल गया।
कोई चुनाव होना है, ऐसा न्यूज़ फैल गया।
दिल्ली से नेताओ का हजुम ही उमड़ पड़ा।
गली का नाम गोदी मीडिया में छाने लगा।

गली के सारे बच्चे और खिलाड़ी बंट गए।
कुछ भारत बने कुछ पाकिस्तान हो गए।
जिसने दाढ़ी बढ़ाई वे मुसलमान हो गये।
सब अपना अपना माहौल बनाने लग गये।

अभी खेल में ट्विस्ट का आना बाकी था।
चारो ओर आग थी ट्वीट का जमाना था।
खेल की आग को मोहल्ले में फैलाने लगे।
चुनाव की जीत में जोड़ तोड़ लगाने लगे।

बिना मारकाट चुनाव निर्विघ्न सम्पन्न हुए।
कोई वोट ईवीएम की धांधली में अटके रहे।
अध्यक्ष नेताजी के मामा के बेटे के साले के
दोस्त के भुआजी के भतीजे का भाई हुआ।

नही बॉल आई नाही बेट ने कमाल दिखाया।
तो क्या पूरे मोहल्ला दो टीमो में बंटता गया।
मम्मी एक टीम में आ गई तो उसकी सहेली
पापा की टीम में कप्तान बनकर बैठ गयी।

तड़का लगा दाऊद अम्बानी कनेक्शन दिखा।
फिर भी लग रहा था जैसे कुछ तो अधूरा था।
चाचा ने आंतकी आने का ऐलान कर दिया।
मोहल्ले के ताबूत में आखरी कील ठोक दिया।

मत सोचो समझना जरा मुश्किल होता गया।
क्रिकेट बोर्ड महाभारत में तब्दील होता गया।

38. अब मंदिर बन जाये

बड़ी मुद्दत से बेघर मान, मंदिर के प्रयास लगाए
बाइस वर्षो के बाद ऐसी शुभ घड़ी अब ले आये
सबल को न दोष गुसांई,अशुभ मुहर्त शुभ बताए
भूमि पूजन 32 सेकिंड के शुभ मुहर्त कर आये

श्रद्धा में अंधे हो हर घड़ी मंदिर की आस लगाए
करो चमत्कार कुछ ऐसा पीलर खडे हो जाए
नल नील कहाँ से लाये जो बालू में मंदिर बनाये
जब पानी मे पत्थर तैराए पीलर खड़े कर जाए।

बिना नींव का पुल बना सेना श्री लंका पहुंचाए
सवाल है अपने घर का,विश्वकर्मा को भिजवाए
परवाह नही की संविधान बदलता है बदल जाए
न्याय का लपेट लिया चीरहरण भी करवा आये

क्या क्या नही कर रहे बस एक मंदिर बन जाये
करते प्रॉमिस इस शुरुआत से और जगह जाए
हर गम गली नुक्कड पर ऐसा अलख जगाए
आप भी करो दया जरा अब ये मंदिर बन जाये

जहां भी मिले पुराने अवशेष तोड़ नया बनाये
अलख जगाए कुछ ऐसा नया भारत बन जाये

39. नाम बदलो अभियान

नाम बदलने के समारोह में योगीजी गुर्राए
सत्तर सालो में विपक्ष से क्या उम्मीद लगाए
ऐसी चलाई सरकार कुछ भी नही कर पाएं
विपक्ष अपने हर नेता को तानाशाह बनाए

दिल्ली की सड़के आत्तताइयो सी छाई रही
कोई बाबर अकबर कोई लोदीरोड बनी रही
ना खदेड़ पाए ऐसा विपक्ष क्या सरकार देगा
जनता ने उसे उखाड़ हमे तख्तनशीन किया

हमने तो देश का नक्शा बदलकर रख दिया
आगे आगे देखिए क्या होता है इस खेल में
गुडगाम गुरुग्राम मुगलसराय डीडीयू हुआ
फैज़ाबाद अयोध्या इलाहाबाद प्रयाग किया

जमाना भी देखेगा हम पूरा भारत बदल देँगे
हर तानाशाह को बदलकर मोदी शाह करेंगे

40. जीवन की रेल - रेल सा जीवन

जीवन हो रेल सा,पल पल आगे बढ़ता जाए।
कभी चले कभी रूके, या निरंतर चलता जाए।
किसी को साथ ले जाए किसे पीछे छोड़ जाये
कभी आने की खुशी या जाने का गम दे जाए।

स्टेशन पर रुक जाए, फिर आगे बढ़ता जाए
एक के बाद एक अपनी मंजिल को बढ़ जाए
हर सिग्नल स्वागत में झुके करीब होता जाए
हरि झंडी देख आगे बढे लाल देख रुक जाए

कभी दाना पानी लेना,कभी थोड़ा सुस्ताना है
कभी सवारी को खिलाने के लिए रुक जाना है।
ना किसी के लिए रुकना ना साथ ही होना है।
निरंतर गति बनाते हुए सदा आगे बढ़ जाना है

कर्तव्य पथ पर उसे अकेले ही बढ़ते जाना है।
न आने की खुशी ना जाने का गम ही करना है।
मंजिल पर बढना सुरक्षा का वादा निभाना है।
अपने पथ से कभी विचलित नही हो जाना है।

जहां भी जाए हमे हर्ष उल्हास फैलाते जाना है
बिछड़े जो भी हमसे उसे गमगीन कर देना है।

41. वाइरस लीक हो गया

जिंग पिंग की लैब से नवंबर में कोरोना वाइरस लीक हो गया।
जिंगपिंग - हेलो ट्रम्प । मेरी लैब से कोरोना वाईरस लीक हो गया । मेरे वुहान शहर पर बड़ा खतरा आ गया । लेकिन में कंट्रोल कर लूंगा।
ट्रम्प - अरे । लेकिन खतरा तो हमे भी है ।लोग आते जाते रहते है।
जिंगपिंग - मैने पूरे शहर को बंद कर दिया । नही फैलेगा । तुम चिंता मत करना। मैं संभाल लूंगा ।
ट्रम्प प्रेस कांफ्रेंस जनवरी में - चीन का वायरस कोई बड़ी बीमारी नही है । देशवाशियो को डरने की जरूरत नही । डब्लू एच ओ, पर भरोसा करने की जरूरत नही । वो तो हमारी ग्रांट पर ही जिंदा है ।
ट्रम्प - मार्च में , जिंगपिंग, तुमने तो कंट्रोल कर लिया । हमारा तो माहौल बिगड़ रहा है । मेरे तो इलेक्शन भी है।
जिंगपिंग - दोस्त, यह तो डब्लू एच् ओ के साथ मिलकर मैने किया है । दुनिया की इकॉनमी सुधारने को । तुम मत घबराओ । बस आपदा में अवसर को तलाशो।
ट्रम्प प्रेस कांफ्रेंस मार्च में - चीन ने दुनिया को मुश्किल में डाला है । में चीन पर आक्रमण करने वाला हु ।
जिंगपिंग- ट्रम्प भरोसा रखो । मैं सभी पड़ोसियो के साथ युद्ध की धमकी देने वाला हु । तुम्हारे बहुत हथियार बिकेंगे । और चौधरी बनकर दूसरे देशों में इज्जज़त भी बढेगी।
ट्रम्प - जल्दी कर भाई । अब सहनशक्ति नही बची । इलेक्शन भी सर पर आ गए।
जिंगपिंग - पूरा नेटवर्क मेरे कंट्रोल में है । तुमको इलेक्शन जीता दूंगा ।
आस्ट्रेलिया ने ट्रम्प को - ये चीन हमारे साथ जबरदस्ति पन्गा ले रहा

है । हमारा नेटवर्क हैक कर रहा है । समझा दो नही तो युद्ध ही एक रास्ता है।
ट्रम्प - डरो मत। हम तुम्हारे साथ है। चीन को मसल डालेंगे । तुम्हारे यहा में अपने युद्धपोत रख रहा हू । काम आए तो भाड़ा दे देना। हथियार चाहिए तो बोलना।
भारत ने ट्रम्प को -ट्रम्प भाई, ये चीन तो 2 वर्ष पहले दोस्ती की बात कर रहा था अब हमारी सीमा में घुस गया।
ट्रम्प - डरो मत। हम तुम्हारे साथ है। चीन को मसल डालेंगे । मेरी पूरी सेना तुम्हारे साथ है। जितने चाहिए हथियार ले जाओ।
ट्रम्प - जिंगपिंग भाई , मजा आ गया । हमारे हथियारों की बिक्री बढ़ गयी । अब तो एक ही रिक्वेस्ट है - कैसे भी करके मेरा इलेक्शन जीता दो।
जिंगपिंग - अरे भाई । तुमको अब भी भरोसा नही । तुम्हारे लिये में सब् कुछ करूँगा। जीत तुम्हारी ही है।
ट्रम्प - अरे भाई । तुम्हारा ही तो भरोसा है । गुस्से में, प्रेस में कुछ कहा हो तो बुरा मत मानना।
जिंगपिंग - नही भाई । दुनिया के लिए हम अलग अलग है । पर है तो एक ही ।